ओमशांति। बच्चे अब प्राणेश्वर भोलानाथ के सन्मुख बैठे हैं और अच्छी रीत जानते हैं कि इस बेहद के मालिक भोलानाथ से हमको फिर से स्वर्ग का वर्सा मिल रहा है। बुद्धि वहाँ चली जाती है, बरोबर बाप द्वारा ही हम बाप के घर जाते हैं। बाप बुलाने आए हैं, जैसे साजन, सजनी को बुलाने आते हैं। यह एक साजन आकर सभी सजनियों को गुल–2 बनाते हैं। इनका नाम ही है पतित–पावन। बच्चे बाप को भूल जाते हैं। यह भूलना भी ड्रामा में है। बाप आए सभी राज़ समझाते हैं। तुम लकी सितारों का मर्तबा बाप से भी ऊँच है। तुम ब्रह्माण्ड के मालिक भी बनते हो और त्रिलोकी के मालिक भी बनते हो। इस समय जैसे बाप ब्रह्माण्ड का मालिक है, तुम बच्चे भी हो। तुम बच्चे भी मुझ बाप के साथ रहने वाले थे। फिर तुम बच्चों को तो पार्ट बजाना ही होता है। तुम जानते हैं, वैकुण्ठनाथ बनने लिए त्रिलोकीनाथ पास आए हो। बाप कहते हैं– बच्चे, तुम भी इस समय त्रिलोकीनाथ हो तो मैं भी त्रिलोकीनाथ हूँ, फिर सतयुग आता है तो उसके नाथ तुम बनते हो, मैं नहीं बनता। मैं आता ही हूँ रावण से, जिससे तुम्हें बहुत मिला है, उससे छुड़ाने। ड्रामा को तो बच्चे समझ गए हो। इनके 4 युग नहीं, बल्कि 5 युग हैं। 4 हैं बड़े, एक संगमयुग लीप युग है। यह नॉलेज भी बच्चों के ध्यान में रहनी चाहिए; क्योंकि ज्ञान सागर के तुम बच्चे बने हो। भक्तिमार्ग उसकी महिमा की जाती है कि तुम ज्ञान के सागर, शांति के सागर हो। यह महिमा फिर वैकुण्ठनाथ की नहीं होती। इनको फिर कहा जाता– सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण...। इस कलियुग में तो होते नहीं, तो ज़रूर कोई बनाने वाला आता होगा। तो स्वर्ग के मालिक सिर्फ तुम ही बनते हो। ब्र०वि०शं० जो सूक्ष्मवतनवासी देवता हैं, इनको भी युगल दिखाते हैं प्रवृत्तिमार्ग दिखाने लिए। तो स्वर्ग भी यहाँ ही होता है। ब्राह्मण वर्ण से तुम देवता वर्ण में आवेंगे। सयाणे बच्चे जो होते हैं वो अच्छी रीति पढ़ाई पर ध्यान देते हैं। अज्ञान काल में भी बाप को बच्चा होता है तो समझते हैं वारिस आया है। तुम भी मम्मा–बाबा कहते हैं तो वारिस ठहरे ना! यूँ तो भारत में मात–पिता बहुतों को कहते हैं, बजुर्ग को पिताजी कहते हैं। वैसे गाँधी को बापू जी कहते थे। वास्तव में वह कोई सभी का बापू जी नहीं था, सिर्फ कहने मात्र कह देते। यह तो सबका बापू जी है ही। प्राणेश्वर अर्थात् सब आत्माओं का ईश्वर बाप है। बाप कहने से वर्से की खुशी दिल में आती है। वह भासना आती है, बरोबर बेहद का बाप आए हमको राजयोग सिखलाते हैं। ब्र०वि०शं० तो राजयोग सिखला न सके। भगवानुवाच्य है– देवी–देवताएँ हैं दैवी गुणों वाले मनुष्य। परमेश्वर माने गॉडफादर। भारत में भी कहते हैं– प०पि०प०, सुप्रीम गॉड फादर। बुद्धि ऊपर में चली जाती है; क्योंकि जानते हैं, फादर ऊपर में रहते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो, हम भी वहाँ के रहने वाले हैं। अभी हम प्राणेश्वर के सन्मुख बैठे हैं। बाप सन्मुख याद दिलाते हैं तो निश्चय करते हो, बरोबर यह कोई साधु–संत–महात्मा नहीं है। हम मात–पिता के सन्मुख बैठे हैं; क्योंकि उनके बने हो, मात–पिता से भविष्य 21 जन्मों का वर्सा लेने। अगर निश्चय नहीं हो क्यों बैठे हो? कारण चाहिए। सिवाए पहचान कोई के सामने बैठ न सके। दुनिया में तो एक/दो की पहचान होती है– यह सन्यासी है, यह गवर्नर है। यहाँ यह ..... तो है गुप्त। जबकि समझते हैं प०पि०प० तो परमधाम में रहने वाला है, फिर इससे सर्वव्यापी की बात उठती नहीं। आत्मा याद करती है– ओ गॉड फादर! खुद ही परमात्मा होते तो फिर पुकारते किसके लिए? बहुत थोड़ी समझने की बात है; परन्तु माया ऐसा पत्थरबुद्धि बनाए देती जो समझते ही नहीं। जो बात मुख से कहते हैं, उसपर फिर विश्वास नहीं करते। माया संशयबुद्धि बना देती है। पुकारते भी हैं– ओ गॉड फादर! फिर कह देते– हम ही फादर हैं। तब पुकारते क्यों हैं? फादर अक्षर बच्चा ही कहेंगे ना! याद एक को ही करना है। अभी तुम सन्मुख बैठे हो।

जानते हो, हम प०पि०प० के बने हैं, उनसे वर्सा लेते हैं। अब तो नहीं भूलेंगे ना! बाप कहते हैं– बच्चे, अशरीरी बनो, ... बनो। मैं तुमको लेने आया हूँ। देवताओं के आगे गाते भी हैं– मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। देवताओं की महिमा गाते हैं, अपने को नीच–पापी समझते हैं। सम्पूर्ण निर्विकारी ज़रूर दुनिया थी। इसको स्वर्ग, शिवालय कहा जाता है– शिवबाबा का स्थापन किया हुआ स्वर्ग। भारतवासी जानते भी हैं, स्वर्ग होता है; परन्तु भारत स्वर्ग था, आदि सनातन देवी–देवताएँ राज्य करते थे– यह भूले हुए हैं। कोई मरता है तो कहते हैं– स्वर्ग पधारा। स्वर्ग होता है सतयुग में, कलियुग में थोड़े ही होता है। जब अख़बार में लिखते हैं– स्वर्ग पधारा, तो तुम पूछो– स्वर्ग होता कहाँ है? समझते हैं, परमधाम में परमात्मा पास गया, वह ही स्वर्ग है या तो कहते– निर्वाणधाम गया या फिर कहते– ज्योति ज्योत समाया। अक्षरों का कितना फर्क है! इसको कहा जाता है ब्रह्म महतत्व। यह है आकाश तत्व, इनको महतत्व नहीं कहेंगे। महतत्व वह है। ब्रह्म महतत्व ब्रह्माण्ड, जहाँ हम आत्माएँ अण्डे रहते हैं। बाप भी वहाँ रहते हैं। उसको परमधाम कहा जाता है। बाकी ब्रह्म में कोई लीन नहीं हो सकता। बच्चों को बहुत प्वाइंट्स समझाई जाती है जबकि सन्मुख बैठे हो। भक्त तो भगवान को ढूँढ़ते रहते हैं। तुम जानते हो भक्तिमार्ग में सबसे भक्ति जास्ती कौन करते हैं। ज़रूर जो पहले पूज्य थे वे ही फिर पहले पुजारी भक्त बनते हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे जानते हो। गाते भी हैं– आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी; परन्तु वो समझते कि परमात्मा बाप खुद ही पूज्य, पुजारी बनते हैं। यह तो रॉंग है। बाप को 84 जन्मों में ले आना बेकायदे है। दूसरे तरफ फिर सर्वव्यापी कह देते। पत्ते–2, भित्तर–ठिक्कर में परमात्मा होता फिर तो परमात्मा का नाम पत्थर हो गया। इसको कहा जाता है 100% मूर्खता। बाप कहते हैं, माया कितना मूर्ख बनाए देती है। मूर्ख मनुष्य हमेशा इनसालवेंट होते हैं। भारत कितना इनसॉलवेंट है, फिर बाप आए कर मूर्ख से बुद्धिवान बनाते हैं। तुम समझते हो, बरोबर हम मूर्ख थे। अभी तुम कितना जानते हो, महिमा वाले बनते हो। देवताओं के आगे गाते हैं– हम पापी, नीच हैं। अब आकर ऊँच बनाते हैं; परन्तु सभी को स्वर्ग की जीवन नहीं मिलेगी। जीवनमुक्ति तो मिलेगी। जीवनमुक्ति अर्थात् माया के बंधन से मुक्त। ऐसे नहीं कि सभी सतयुग में आवेंगे। सतयुग में तो वो ही आवेंगे जो राजयोग सीखते हैं। इस ज्ञानमार्ग में कितने बंधनों से निकलना पड़ता है। मीरा को कोई इतने बंधन न थे। वो सिर्फ कहती थी, कृष्ण से मिलना है; इसलिए पवित्र बनूँगी। तुमको तो कृष्णपुरी में जाना है। वो मीरा थी भक्ति शिरोमणि। तो विजयमाला पूजी जाती है। भक्त तो बच्चों की माला को पूजते हैं। पहले हैं रुद्र माला, फिर विष्णु की माला बनती है। यह कोई नहीं जानते कि माला किसकी बनी हुई है। सिर्फ माला सिमरते रहते। अभी तुम भक्तों की माला नहीं सिमरते। (भल) तुम बच्चों की मा(ला) सिमरते हैं। तुम जानते हो, हम विजयमाला बन रहे हैं, फिर हम ही पुजारी बन माला फेरेंगे। तुम राज्य भी करते हो, फिर जाकर सबसे पहले तुम ही माला फेरेंगे। तुमसे फिर भक्ति और सीखेंगे। तुम विश्व को स्वर्ग बनाते हैं। बाप राजयोग सिखलाते हैं, जिसका नाम गीता रखा है। धर्म शास्त्र का नाम तो चाहिए ना! भल ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है; परन्तु शास्त्र तो बनेंगे ना! शास्त्र बनाए इसका नाम श्रीमत भगवत रखा है। भक्तिमार्ग के लिए गीता बनाते हैं। वो गीता कोई ज्ञानमार्ग के लिए नहीं है। कितनी गीताएँ सुनाते रहते! ऐसे कभी नहीं कहते कि तुमको राजयोग सिखाते हैं। कहेंगे, भगवान राजयोग सिखलाके गए थे, फिर इसके शास्त्र बैठ पढ़ते हैं। पढ़ते–2 दुर्गति को पहुँच गए। वो ही गीता फिर अब भगवान द्वारा सुनकर हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं। भक्तिमार्ग की शास्त्र कितने पढ़ते आए, फायदा कुछ भी नहीं हुआ, और ही दुर्गति को पा लिया है। अब

P.T.O.

बाप कहते हैं, मैं तुम बच्चों को एक ही बार राजयोग सिखाकर सो राजाओं का राजा बनाने आया हूँ। वह गीता 63 जन्म सुनते–2 तुम क्या बन गए हो! तो अवश्य कहेंगे ना कि भक्तिमार्ग, दुर्गति मार्ग है। जब तक सद्गति देने वाला न आवे तब तक भक्तिमार्ग की महिमा अवश्य निकलेगी। जो कल्प पहले आए होंगे वह आकर यह सुनेंगे। अजुन तो बहुत सुनने वाले हैं। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है तो कितने आवेंगे। इस ज्ञान का विनाश नहीं हो(ता) है। साहुकार प्रजा, साधारण प्रजा, नौकर आदि भी चाहिए ना! मनुष्य नहीं जानते, इतनी बड़ी सतयुगी राजधानी स्थापन होती है। अगर जाने तो सुनावे। बाप को ही भूल गए हैं। निराकार शिव भगवानुवाच्य बदली कृष्ण भगवानुवाच्य लिख दिया है। शिव जयन्ती के बाद फट से कृष्ण जयन्ती आती है। कृष्ण है वैकुण्ठनाथ, शिवबाबा है त्रिलोकीनाथ। तुमको यह बैठ वैकुण्ठनाथ बनाते हैं। कृष्ण को फिर द्वापर में ले गए हैं। भारत के ज्ञान का सू(त) कितना मुँझा हुआ है। तुमको नॉलेजफुल बनना है। देखना है, कितनी मार्क्स से पास होते हो। अब पास होंगे तो कल्प–(2) पास होंगे। गृहस्थ में रहते पढ़ना है। कहीं भी बूढ़े–बुढ़ियाँ, स्त्री–पुरुष, बहू आदि सब इकट्ठे नहीं पढ़ते हैं। शास्त्र भी ऐसे नहीं पढ़ते। माताओं को तो कहते कि शास्त्र नहीं पढ़ना है। पुरुष ही पण्डित बन पढ़ते हैं। यहाँ देखो, कौन–(2) पढ़ते हैं! कैसे बुढ़ियाँ आती हैं, वंडर है ना! गृहस्थ में कमल फूल सम(ान) पवित्र रह राजयोग सीख(ना) है। गॉड फादरली स्टूडेंट बनना है। नाम ही है बी.के.के.ईश्वरीय कॉलेज। ईश्वर ब्रह्मा द्वारा बच्चों को पढ़ाते हैं। ब्रह्मा के हाथ में ही शास्त्र दिखाते हैं। ब्रह्मा कोई विष्णु के नाभि से थोड़े निकला है। यह परमात्मा की नाभि कहेंगे। बीजरूप शिवबाबा है, उनसे ब्र०वि०शं० निकले। तीनों का अर्थ ही भिन्न है। अब वह चित्र तो बेकार है। विष्णु को हमे(शा) लक्ष्मी देते हैं। नर–नारायण को चतुर्भुज दिखाते हैं। नारायण–लक्ष्मी को अलग–2 दो–2 भुजा देनी चाहिए। ऐसा कायदे सिर मंदिर बनाना चाहिए। नर–नारायण साथ लक्ष्मी भी है। दीपमाला में (महा)लक्ष्मी की पूजा करते हैं। माताओं की कितनी महिमा है। जगदम्बा की बड़ी महिमा है। अम्बा जी पर बड़े मेले लगते हैं; क्योंकि कुमारी है। यह तो अधर है तो डिग्रेड हो गया। कुमारियों का भारत में मान बहुत है; परन्तु महत्व को नहीं जानते। जगदम्बा का बहुत मान है। बाप का (इ)तना नहीं। बाप ने आकर माताओं को ऊँच उठाया है। शंकराचार्य वाच्य कि नारी नर्क का द्वार है और शिवाचार्य वाच्य ब्रह्मा द्वारा कि नारी स्वर्ग का द्वार है। रात–दिन का फर्क हो गया! मनुष्य सन्यासियों पिछाड़ी फँस पड़े हैं। उन्हों के शिष्य बनते हैं। वह इनसल्ट करते कि नारी नर्क का द्वार है। इसलिए बाप कहते हैं, इन सबको छोड़ो। आगे तो माइयाँ पति के चरण धोकर पीती थीं। समझती थीं, पति परमेश्वर है। अब जो सन्यासी नारी को नर्क का द्वार कहते, वह ही नारियाँ फिर अंधश्रद्धा में सन्यासियों के ही पाँव धोकर जल पीती हैं, औरों को पिलाती हैं। अंधश्रद्धा हुई ना! वास्तव में तो **S** को नारी का तो मुँह भी नहीं देखना है। **S** भी पहले सतोप्रधान थे। अब तो तमोप्रधान बन पड़े हैं तो वह ताकत न है। जैसे देवी–देवताएँ भी तमोप्रधान बन गए हैं। उन्हों के साथ सब तमोप्रधान बने हैं। तमोप्रधान बने तब तो बाप आकर सतोप्रधान बनावे। यह है खेल। देवताएँ कितने ऊँच थे, अभी कितने गरीब हैं! तो बाप आकर (इ)न गरीबों को ही उठाते हैं। दान भी सदैव गरीबों को ही किया जाता है। सभी से अधिक गरीब होती हैं कन्याएँ। कन्या को कोई वर्सा नहीं मिलता है।

बच्चों को वर्सा मिलता है; इसलिए उनको नशा रहता है। कन्या दूसरे घर में जाती है। हाफपार्टनर (को) मिलता कुछ नहीं, सब बच्चों को दे जाते हैं। माताओं को भीख माँगनी पड़ती है; इसलिए बाप आ(कर) कन्याओं को उठाते हैं। बहादुर बनना चाहिए। शेर पर सवारी चाहिए। अत्याचार तो होंगे। बाप कामी है तो बच्चों को भी कामी बनाने पुरुषार्थ कराते हैं। तुम तो कहेंगे– गले पर कोई कुल्हाड़ी लगा दे तो भी शादी न करेंगे। बाप के बने तो धरत पड़े धर्म न छोड़िए। ऊँच पद ज़रूर पाना है। कायरता न चाहिए। मीरा भी पवित्र बनी ना। बोलो, हम पवित्र बन वैकुण्ठ के मालिक बनने चाहते हैं। कुमारियों का बहुत नामबाला है। कुमारी वह जो 21 कुल को तारे। यह सारे संगमयुग की महिमा है। तुम हो ब्रह्मा के बच्चे बी.के.कुमारियाँ। भगवान, ब्रह्मा तन से पढ़ा रहे हैं। बाप से वर्सा लेने हिम्मत हो तो आओ, नहीं तो हार खाए पद गँवा देंगे। बाबा राय देते रहते हैं– वर्सा लेना है तो पवित्र बनो। भगवानुवाच्य, गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहना है। विकार में जाने वाले गृहस्थी पढ़ न सकें। इनकी बुद्धि में ठहरेगा नहीं। स्नान करते हैं पवित्र बनने लिए। गंगा अगर पावन बनाती है तो और तरफ धक्के क्यों खाते? फिर तो गंगा में जाओ ना! बद्रीनाथ, द्वारका आदि तरफ जाने से थोड़े पवित्र बनेंगे। यह सब राज़ बाप समझाते हैं। सबको हिम्मत रखनी है बाप से वर्सा लेने। बाप कहते हैं, याद करते रहो। कमज़ोर की बुद्धि बाहर धक्के खाती रहेगी। जिनकी बुद्धि में नहीं ठहरता उनकी बुद्धि बाहर धक्के खाती रहती है। पढ़ते–2 बाहर गए और खेल खलास, नशा टूट पड़ता है। अमरनाथ पर पिजन को क्यों दिखा(या) है? अमरकथा सुनाते थे तो पैरट रखना चाहिए ना, जो सुनकर और सुनावें। बाप कहते हैं, हमारे पास भी पिजन हैं, कण्ठी का निशान भी नहीं होता है। कितने अच्छे–2 पैरट्स भी आए हैं। कितना ध्यान में जाते थे; परन्तु माया कम न है। कोई अवज्ञा करने से (हरा) दिया, बहुत चले गए। ऐसे नहीं सब कायम रह सकते हैं। बाबा जानते हैं, ऐसे बहुत जाने वाले हैं। देखते हो, 5 बरस से बाबा के पास रहते थे, माया ने ... ऐसे ज़ोर से थप्पड़ लगाया जो एकदम खलास कर दिया। आज हैं नहीं। तो संभाल करनी चाहिए। मेहनत है सिर्फ याद करने की। खबरदार रहना है। सर्जन बैठा है। हर एक का कर्मबंधन अलग–2 है। हर एक को दवाई डायरैक्ट सर्जन से लेनी है। वाइस सर्जन भी है, फिर भी मुख्य तो मुख्य है। बाबा कहते हैं, बहुत गरीब ते गरीब भी कितना पद पाते हैं। मम्मा गरीब ते गरीब थी। यह फिर साधारण, नहीं तो इतने सभी की सम्भाल कैसे हो। तो मम्मा कुमारी ऊँची चली गई। शिवबाबा कुमारियों का मान ऊँचा करते हैं। कुमारी को कितना खिलाते–पिलाते, पाँव पड़ते हैं, महात्मा से भी ऊँच समझते हैं। शादी की और खलास, फिर सबके आगे माथा झुकाना पड़े। कन्याओं के लिए बहुत सहज है, गृहस्थियों को तो चाढ़ी उतरनी पड़े, फिर शादी करनी ही क्यों चाहिए? पतिव्रता स्त्री पति के पिछाड़ी (चिता) पर चढ़ती है ना! ये तो पतियों का पति है। साजन आते हैं, श्रृंगार कर, पवित्र बनाए ले जाते हैं। बाप कहते हैं, मैं तुमको साथ में ले जाऊँगा। ऐसा गुरु कोई होता नहीं। मनुष्य कितने मुर्ख बुद्धि हैं, एक गुरु मर जाए तो उनके पीछे जो गद्दी पर बैठे उनको गुरु बनाए देते। वो मरे तो फिर तीसरा गुरु एक/दो पिछाड़ी करते रहते। स्त्री का पति मर जाए तो उनके पिछाड़ी उनके बच्चे को थोड़े ही गुरु करेंगे। कितने गुरु करते हैं। समझते हैं, देखें कोई और रास्ता मिल जावे। विश्वास नहीं बैठता तो गुरु करते ही क्यों हो? कोई में करामात देखने से भाव बैठा फिर दूसरे को भी ले जावेंगे– फलाना बहुत अच्छा है। यह याद रखो कि हम अब त्रिलोकीनाथ हैं। बाबा त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी बनाते हैं, फिर वैकुण्ठनाथ बनेंगे। बाबा खुद नहीं बनते, तुमको बनाते हैं। अच्छा, मात–पिता, बापदादा का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। (प्राण मम्मा 17.7.64 को मधुबन स्वर्ग आश्रम में पधार रही हैं, ऐसा बॉम्बे में समाचार आया है।)